डॉ. अमिता सिंह

नैतिकता से आध्यात्मिकता की ओर

साहित्य एवं धर्म

सम्पादक

डॉ. अमिता सिंह

Yugantar PRAKASHAN
Khojwan Bazar, Varanasi
Email : rajkumarjaiswal2012@gmail.com
Contact : +91-9935408247

ISBN 9383291-25-7
9 789383 291250

नैतिकता से आध्यात्मिकता की ओर
साहित्य एवं धर्म
सम्पादक
डॉ. अमिता सिंह

नैतिकता से आध्यात्मिकता की ओर
साहित्य एवं धर्म
सम्पादक
डॉ. अमिता सिंह

प्रकाशक
युगान्तर प्रकाशन
खोजवाँ बाजार, वाराणसी.
ई-मेल : rajkumarjaiswal2012@gmail.com

ISBN : 978-93-83291-25-0

प्रथम संस्करण - 2017

मूल्य : रु. 1200/-

आवरण
दीपराज जायसवाल

मुद्रक
डी.जी. प्रिण्टर्स, खोजवाँ बाजार,
वाराणसी, मो. 9935408247

प्राक्कथन

पुस्तक के प्रकाशन में जिन्होंने हमें मन, वचन और एवं कर्म से सम्बलन, मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान कर उत्साह तथा प्रेरणा का शुभाशीष दिया, उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा दायित्व है।

सर्वप्रथम मैं उन विद्वज्जनों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने गुणवत्तापूर्ण एवं तथ्यपरक शोध-पत्रों द्वारा कल्पनातीत योगदान दिया है, जिसके फलस्वरूप पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हुआ है। मैं उनके उत्कृष्ट शोधपत्र के सम्प्रेषण हेतु हार्दिक रूप से आभार ज्ञापित करती हूँ।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) शिव नारायण गुप्त के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पुस्तक का सम्पादन हुआ। मैं अपने समस्त सहकर्मियों और मित्रों, विशेष रूप से अर्चना सिंह (असि. प्रो. अंग्रेजी) के प्रति भी आभार ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने विभिन्न रूपों में मुझे सहयोग प्रदान किया है।

इस पुस्तक में शोध-पत्रों के संयोजन एवं सम्पादन में सहयोग हेतु मैं डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह (असि. प्रो. समाजशास्त्र) के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या के पश्चात् भी मुझे अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने माता-पिता एवं अनुजद्वय की ऋणी हूँ, जिन्होंने हमें न केवल सहयोग प्रदान किया, अपितु भावनात्मक सम्बलन भी दिया। आपके अतिरिक्त अपने पति स्व. अरूण सिंह के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना परमसौभाग्य मानती हूँ, जिनकी स्मृतियों ने अनवरत प्रेरणा का कार्य किया है।

प्रकाशन के कार्य में अत्यन्त पटु श्री राजकुमार जायसवाल, युगान्तर प्रकाशन, वाराणसी ने अत्यन्त परिश्रम एवं आत्मीयता के साथ प्रकाशन कार्य किया है। मैं उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पुस्तक को विचक्षणार्थी विद्वानों के कर कमलों में समपित करती हूँ

''त्वदीयं वस्तु गोविन्द! तुभ्यमेव समर्पये''

माघ नवमी, संवत् 2073

डॉ. अमिता सिंह

का त्याग करके सफलता-असफलता को समान मानते हुए ही कर्म करो।' इस प्रकार से गीता में भी ऐसे कर्म करने की बात कही गयी है जो नीति-सम्मत, लोक कल्याणकारी हों और इसी को वह माध्यम माना गया है, जिसके द्वारा चरम आध्यात्मिक स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है।

आधुनिक समय में भी ऐसे कई करिश्माई व्यक्तित्व के व्यक्ति हैं जो नैतिकता के मार्ग पर अग्रसर होकर कार्य को करने की प्रेरणा देते हैं, जैसे कि महात्मा गाँधी जिन्होने न केवल दैनिक जीवन में नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहन प्रदान किया, बल्कि आर्थिक क्षेत्र में भी ऐसे कार्य करने के लिए लोगों को प्रेरित किया, जो सामाजिक कल्याण के साथ ही साथ प्राणीमात्र के व्यक्तित्व को नवीन ऊँचाई प्रदान करते हैं। ऐसे विचारों में गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित न्यासिता का सिद्धान्त एक है, जिसमें यह कहा गया है कि व्यक्ति को अपने धन का केवल उतना ही उपयोग करना चाहिए, जितना जीवन जीने के लिए आवश्यक है। शेष धन का उपयोग एक न्यासी के रूप में करना चाहिए, जिससे समाज का कल्याण हो सके। गाँधी जी की ही भाँति डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी समग्र समाज के विकास में नैतिकता के महत्त्व को उपयोगी माना है। उन्होंने समाज के निचले तबके से यह बात कही है कि यदि आपको समाज की मुख्य धारा में आना है और अपने जीवन -स्तर को ऊपर उठाना है तो नैतिकता का पालन करना होगा, असत्य बोलना बन्द करना होगा। इन महान् विभूतियों के अतिरिक्त ज्योतिबा राव फुले, सावित्री बाई फुले, राजाराम मोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि ने भी नैतिकता के माध्यम से ही मानव-समाज के उत्थान की बात कही है।

यह पुस्तक नैतिकता से आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होने वाले समस्त बिन्दुओं पर चर्चा करती है, ऐसे विद्वज्जन ज़ो नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विषय में विमर्श, शोध एवं मनन करते हैं या जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं? उनके लिये यह पुस्तक मील का पत्थर सिद्ध होगी।

माघ नवमी, 2073

डॉ. अमिता सिंह

विषय-सूची

प्राक्कथन 03

प्रस्तावना 05

- धर्म-जिज्ञासा **डॉ. शिवनारायण गुप्त** 11
- नैतिकता के विकास में वैदिक शिक्षा की भूमिका तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य **डॉ0 सुनीता जायसवाल** 18
- वेदों में वर्णित सुकृत की वर्तमान प्रासंगिकता **डॉ विजयशंकर द्विवेदी** 28
- अद्वैतवेदान्त का आचार–दर्शन **डॉ. अवधेश प्रताप सिंह** 34
- गीता में निष्काम कर्मयोग का अनुशीलन **डॉ. गौरव त्रिपाठी** 43
- भारतीय परिप्रेक्ष्य में नैतिकता, आध्यत्मिकता एवं धर्म **डॉ0 मिथिलेश कुमार सिंह** 48
- कालिदास के नाटकों में नैतिक मूल्यों की अवधारणा **डॉ0 उष्मा यादव** 53
- नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के निर्माण में हिन्दी साहित्य का योगदान **अजय कुमार सिंह** 59
- नैतिकता, आध्यात्मिकता और धर्म **अखिलेश खण्डुड़ी** 65
- सामाजिक सुरक्षा के विकास में अध्यात्मिकता एवं धर्म की भूमिका **अखिलेश कुमार सिंह** 69
- भारतीय दर्शन में नैतिकता एवं आध्यात्मवाद की अवधारणा **अमित सिंह** 75
- नैतिकता एवं आध्यात्मिकता में योग **डॉ0 अनामिका पाठक** 81
- रघुवंश में वर्णित नैतिक व्यक्तित्त्व **आनन्द कुमार** 89
- भारतीय इतिहास में सामाजिक नैतिकता का आध्यात्मिक विकास **डॉ0 अनिरूद्ध कुमार** 93
- "नैतिक एवं आचारशास्त्रीय दृष्टि से श्रीमद्भगवतद्गीता की प्रासंगिकता **अनुज कुमार निर्मल** 98
- नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में साहित्य की भूमिका **आरजू सिंह** 101
- आदिकाव्य रामायण में धर्म के स्वरूप का विवेचन **अर्पिता त्रिपाठी** 107
- महाभारत के वन पर्व में अन्तर्निहित सदाचार एवं धार्मिक विचार **अरूणा यादव** 112
- वेदों में वर्णित नैतिक मूल्य : एक विमर्श **अशोक कुमार वर्मा** 117
- नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं उपनिषद् दर्शन **आशुतोष यादव** 121

- नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं पर्यावरण संरक्षण
  बालकृष्ण बघानी
- शिशुपालवध में विद्यमान नीतिबोध **बीना यादव** 126
- ऊर्दू साहित्य में नैतिकता और आध्यात्मिकता 129
  श्री दाऊद अहमद
- श्री श्री रविशंकर जी का आध्यात्मिक योगदान तथा सुदर्शन क्रिया की प्रासंगिकता 132
  दीपक कुमार
- आचार्य भरत के नाट्यषास्त्र में नैतिकबोध से राष्ट्र हित की परिकल्पना 135
  देवी प्रसाद गुप्त
- नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं धर्म **धर्मेन्द्र कुमार** 144
- भारतीय संस्कृति में विकास के बदलते आयाम 147
  डॉ0 निर्मला गुप्ता
- नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में साहित्य की भूमिका 153
  डा0 प्रतिमा कुमारी शुक्ला
- अशोक के अभिलेखों में प्रतिम्बिवित धर्म एवं नैतिकता 159
  डॉ0 प्रियंका सिंह,
  अजित कुमार चौधरी
- नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में कबीर साहित्य का योगदान 163
  डॉ0 शशिकला
- मूल्य बोध और साहित्य **डॉ0 सुधा** 166
- उत्तररामचरित में वर्णित सार्वभौमिक जीवनमूल्य सामाजिकता, नैतिकता के सन्दर्भ में 171
  हेमलता दूबे
- समसामयिकी पर्यावरणीय समस्याएल्ल एवं निदान (वैदिक चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में) 174
  डॉ. दयाशंकर तिवारी, जगनारायण मिश्र
- नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं धर्म **डॉ0 जनार्दन झा** 181
- धर्म के स्वरूप पर ऋग्वैदिक दृष्टि **कन्हैया लाल यादव** 187
- वेदों में वनस्पति एवं मन्त्र की प्रासंगिकता 193
  श्रीमती डॉ. कीर्ति शुक्ला
- मानव मूल्यों के विकास में नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं धर्म की भूमिका 196
  डॉ. प्रमिला मिश्रा
- नैतिकता एव आध्यात्मिकता के विकास में संस्कारों की महत्ता एवं उपादेयता 202
  मनीषा सिंह
- भारतीय समाज में नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं धर्म का स्वरूप 206
  मनोज कुमार यादव
- दैनिक जीवन में नैतिकता, आध्यात्मिकता और धर्म 210
  मनोज कुमार 215

- किरातार्जुनीयम् में निहित नैतिक आदर्श
  मीना यादव
- धर्म एवं नैतिकता का संबंध **नवनीत कुमार तिवारी** 222
- महर्षि व्यास की धार्मिक दृष्टिः महाभारत के परिप्रेक्ष्य में 226
  निधि यादव
- राजनीति में नैतिकता एवं आध्यात्मिकता महाभारत के विशेष सन्दर्भ में 228
  पूजा जायसवाल
- वाल्मीकि रामायण में अन्तर्निहित जीवनदर्षन की प्रासंगिकता 231
  प्रभात कुमार
- नैतिकता आध्यामिकता एवं धर्म **डॉ. के.के. सिंह** 236
  प्रियंकाप्रजापति
- नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में ऋग्वैदिक मूल्यों की भूमिका 241
  डॉ0 रश्मि यादव
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में धर्म बनाता विज्ञान 245
  रेखा सिंह
- अध्यात्म और नैतिकता के पैमाने पर 'आखिरी कलाम' 251
  स्कन्द स्वामी नारायण सिंह
- संस्कृत साहित्य में नैतिकता एवं धर्म 257
  सन्तोष कुमार
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कृत शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व 262
  सतीश प्रताप सिंह
- वाल्मीकि रामायण में प्रतिबिम्बित मानव–मूल्यों का सामाजिक अनुशीलन 269
  सौम्या कृष्ण
- श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग में प्रतिबिम्बित नैतिक दर्शन 273
  श्याम शंकर
- साहित्य : सामाजिक उन्नति एवं सुख – शान्ति का सन्देश वाहक 280
  डॉ0 उमा श्रीवास्तव
- श्रीमद्भगवद्गीता में निहित नैतिक विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता 284
  प्रतिमा सिंह
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में नारी नैतिकता की झलक 287
  बदरे आलम
- नैतिक, चारित्रिक एवं धार्मिक उत्थान में शिक्षा की भूमिका 292
  विभा रानी
- स्वामी विवेकानन्द का दर्शनः एक अध्ययन 295
  रवीन्द्र कुमार वर्मा
- नैतिकता, आध्यात्मिकता और साहित्य की भूमिका 300
  डॉ. स्मृति आनंद 306

नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के विकास में कबीर साहित्य का योगदान

डॉ0 शशिकला*

नैतिकता का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। जैसे–जैसे सामाजिक विकास होता गया नैतिकता का रूप भी बदलता गया। सर्वप्रथम मनुष्य एक कबीले में झुण्ड बना के रहता था, उस कबीले का भी कोई कायदा–कानून होता था, उन नियमों का पालन करना ही नैतिकता थी। नैतिकता का अच्छा उदाहरण सर्वप्रथम परिवार में देखा जा सकता है। परिवार को चलाने का कार्य घर के मुखिया का होता और उसके द्वारा परिवार में कुछ नियम बनाये जाते हैं और उन नियमों का पालन करना ही नैतिकता है। नैतिकता मनुष्य का वह गुण है जो उसे देवत्व के समीप ले जाता है। मनुष्य में यदि नैतिकता न होती तो मनुष्य एवं पशु में कोई विशेष अंतर नहीं होता। वेदों, उपनिषदों, जातक कथाओं एवं सभी धर्मग्रंथों में नीति एवं सदाचार की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है जो चरित्र को दृढ़ता प्रदान करता है। मनुष्य के जीवन में अच्छे चरित्र का विशेष महत्व है। संस्कृत की यह सूक्ति चरित्र के महत्व को उजागर करती है–

"वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमेति च याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्तस्तु हतो हतः।।

अर्थात् सदाचार की रक्षा यत्नपूर्वक करनी चाहिए, धन तो आता और जाता रहता है, धन क्षीण हो जाने पर भी सदाचारी मनुष्य क्षीण नहीं होता है किन्तु जो सदाचार से भ्रष्ट हो गया, उसका तो सम्पूर्ण जीवन ही नष्ट हो जाता है।

नैतिकता मनुष्य के जीवन को सम्यक एवं सुचारू ढ़ंग से चलाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है इसके अभाव में मनुष्य का सामूहिक जीवन ही कठिन हो जाता है। नैतिकता से उत्पन्न नैतिक मूल्य ही मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता है और भारतीय परंपरा में नैतिक मूल्य को ही धर्म का नाम दिया जाता है। धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जिसका पालन मन, वचन, एवं कर्म से किया जाता है। धर्म एवं अध्यात्म का तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि केवल भगवान् की भक्ति में लीन रहा जाय बल्कि हम उसे धर्म कहेंगे जो व्यक्ति के स्वयं के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ दूसरों के विकास एवं कल्याण में बाधा न पहुँचाये। नैतिकता सामाजिक जीवन को सुगम एवं सरल बनाती है और अप्रत्यक्ष रूप से समाज पर नियंत्रण भी बनाये रखती है।

* असि0 प्रोफे0,हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी.

आध्यात्मिकता मूलतः व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपने व्यक्तित्व में एकत्रित गंदगी को निकाल पाते हैं और हमारे जीवन में नयी ऊर्जा का संचार होता है। किसी कार्य में तन्मयता से डूब जाना आध्यात्मिकता है, क्योंकि किसी कार्य को सतही तौर पर जानना एवं करना सांसारिकता है और उसकी गहराई में जाना आध्यात्मिकता।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, इसलिए प्रत्येक युग का साहित्य अपनी अलग–अलग विशेषता लिए हुए आता है। रचनाकार अपने सामाजिक सरोकारों से विमुक्त नहीं हो सकता, यही कारण है कि साहित्य अपने समय का इतिहास बनता चला जाता है। अच्छा साहित्य मन को शांति प्रदान करता है तथा किसी भी विपरीत परिस्थिति में मन को दृढ़ता प्रदान करता है। अपने ऐतिहासिक भाषण में प्रेमचन्द ने कहा है–"जिस साहित्य में हमारी रुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शांति पैदा न हो, हमारा सौन्दर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता उत्पन्न न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।"[1]

प्लेटो का मानना है कि साहित्य की उपयोगिता तभी है जब वह मनुष्य में नैतिक मूल्यों का विकास करे और सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की स्थापना कर सके। उनकी दृष्टि में–"वही साहित्य सुन्दर है जो सत्य और शिव है, उनके लिए सुंदर, सत्य और शिव पर्याय जैसे हैं। जो सत्य एवं शिव नहीं है अर्थात् जो समाज के लिए उपयोगी और नैतिक नहीं है, वह साहित्य भी ग्राह्य नहीं है।"[2]

भारतीय इतिहास में इस्लाम के आगमन से धर्म एवं सामाजिक व्यवस्था को गहरी चोट लगी, इस्लाम ने जनता में अराजकता की भावना भर दी, चारों तरफ अनैतिकता व्याप्त हो गई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है–"जिस युग में कबीर आविर्भूत हुए थे उसके कुछ ही पूर्व भारत के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना घट चुकी थी। यह घटना इस्लाम जैसे एक सुसंगठित सम्प्रदाय का आगमन था। इस घटना ने भारतीय धर्ममत और समाज–व्यवस्था को बुरी तरह से झकझोर दिया था। उसकी अपरिवर्तनीय समझी जानेवाली जाति–व्यवस्था को पहली बार जबर्दस्त ठोकर लगी थी। सारा भारतीय वातावरण क्षुब्ध था। बहुत से पंडितजन इस संक्षोभ का कारण खोजने में व्यस्त थे और अपने–अपने ढंग पर भारतीय समाज और धर्ममत को संभालने का प्रयत्न कर रहे थे।"[3]

संत कबीर के पदार्पण ने घोर निराशा से भरी हुई सम्पूर्ण जनता के विश्वास को जगाया तथा जनता को अपनी भक्ति का ऐसा आधार दिया कि वह राम रस में भावविह्वल हो उठी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि–"इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथपंथियों के प्रभाव से प्रेमभाव और भक्तिरस से शून्य और शुष्क पड़ता जा रहा था। उनके द्वारा यह बहुत आवश्यक कार्य हुआ। इसके साथ ही मनुष्यत्व की सामान्य भावना को आगे करके निम्न श्रेणी की जनता में उन्होंने आत्मगौरव का भाव जगाया।"[4]

कबीर हर धर्म की अच्छाई एवं बुराई दोनों से भलीभाँति परिचित थे इसलिए उन्होंने जनता को निर्गुण राम के प्रति जागरूक किया। कबीर की भक्ति पर सिद्ध, नाथ एवं सूफी मत के साथ–साथ वैष्णव विचारधारा का भी आंशिक प्रभाव पड़ा। कबीर एक

स्त्री विमर्श के विविध आयाम

डॉ. आशा वर्मा

डॉ. भानु प्रताप सिंह

स्त्री विमर्श के विविध आयाम

प्रथम संस्करण- 2017

सम्पादक-	**डॉ. आशा वर्मा** **डॉ. भानु प्रताप सिंह**
प्रकाशक -	**सुपर प्रकाशन** के-444 विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-27 मो.-09335597658, 08896244776
शब्द संयोजन-	**सर्वेश तिवारी 'राजन'**
मुद्रक -	**पूजा प्रिन्टर्स** नौबस्ता, कानपुर-22
मूल्य -	**800/-** (आठ सौ रुपये केवल)

I.S.B.N. No. : 978-93-83688-19-7

Ishtri Vimarsh Ke Vividh Ayam

By- Dr. Asha Verma, Dr. Bhanu Pratap Singh

Price - Rs. Eight Hundred only.

अनुक्रम

1- अधुना महिला-कहानीकारों की कहानियों में नारी परिदृश्य 11
- डॉ. हरीतिमा कुमार, डॉ. वन्दना यादव

2- बौद्धकालीन मूल्यपरक स्त्री शिक्षा 20
- डॉ. (श्रीमती) ममता गंगवार

3- मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में अभिव्यक्त नारी 28
- डॉ. कंचनलता यादव

4- भारतीय जनतंत्र में महिला और विकास 34
- डॉ. आर. के. त्रिपाठी

5- साहित्यिक परिप्रेक्ष्य और भारतीय स्त्री 52
- डॉ. प्रीति कुमारी

6- चिकन दस्तकारी में स्त्रियाँ - लखनऊ जनपद के संदर्भ में 63
- डॉ. कामिनी वर्मा

7- हिन्दी आत्मकथा लेखिकाएँ - पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन 71
- डॉ. शशिकला

8- नारी शिक्षा : एक अध्ययन 78
- डॉ. गीता अस्थाना

9- उदयभानु हंस के काव्य में नारी विमर्श 84
- डॉ. आशा वर्मा

10- महिला सशक्तिकरण - ग्रामीण परिवेश 91
- डॉ. भानुप्रताप सिंह, डॉ. राम प्रकाश

11- सीमोन द बोउवार के नारी-चिंतन की प्रासंगिकता 97
- डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. मंजुला श्रीवास्तव

12- महिलाओं की आधुनिक युग में सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति 107
- डॉ. अखिला सिंह गौर

13- साहित्यिक एवं सामाजिक परिदृश्य में नारी 110
- डॉ. साधना मिश्रा

14- लुप्त होती बेटियाँ - समस्या और समाधान 113
- डॉ. विभा मेहरोत्रा

15- नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा - ध्रुवस्वामिनी 119
- डॉ. सुमन सिंह

16- मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में नारी सशक्तिकरण 125
- डॉ. मीता अरोरा

17- वैदिककालीन नारियों की स्थिति 132
- डॉ. प्रीति राठौर, डॉ. विपिन चन्द्र कौशिक

18- स्त्री विमर्श - साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में 137
- डॉ. वायला एम नेथन सिंह

19- पूर्व मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति 141
- सुमित्रानन्द श्रीवास्तव

20- नारी साक्षरता एवं नारी के नैतिक मूल्यों में हुए परिवर्तन का बाल साहित्य पर प्रभाव 47
- डॉ. तीर्थमणि त्रिपाठी

21- मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में नारी विमर्श 151
- डॉ. अनिता सिंह

22- भारतीय समाज में नारी की भूमिका 157
- डॉ. सिम्पल मेहरोत्रा,
- डॉ. हेमलता सांगुरी

23- नारी विमर्श के विविध आयाम 164
- डॉ. सीमा मिश्रा

24- मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी चरित्रों का स्वरूप 171
- डॉ. मंजूलता निगम

25- प्राचीन साहित्य एवं समाज में नारी की भागीदारी 176
- डॉ. निधि बाजपेयी

26- स्त्री विमर्श को खुला आसमान प्रदान करती मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाएँ 180
- जया त्रिपाठी, के. सी. त्रिपाठी

24- अमरकान्त के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 187
- अर्चना वर्मा, डॉ. रानी अग्रवाल

हिन्दी आत्मकथा लेखिकाएं :पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन

– डॉ. शशिकला
असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

नारीवादी आंदोलन की शुरुआत सबसे पहले पश्चिमी देशों में हुई, जिससे पाश्चात्य देशों में स्त्रियों का अपने अधिकार एवं अस्तित्व के प्रति सज़गता स्वाभाविक सी बात थी, इसी सज़गता ने स्त्रियों को आत्मकथा लेखन की ओर अग्रसर किया। पाश्चात्य जगत में भी स्त्री रचनाकारों द्वारा आत्मकथा लेखन की प्रक्रिया भले ही आम बात हो किन्तु पुरुष लेखकों की आत्मकथाओं की अपेक्षा स्त्री लेखिकाओं की आत्मकथा का अनुपात कम मिलता है।

महिला रचनाकारों में सर्वप्रथम नाम महादेवी वर्मा का आता है जिन्होंने कोई आत्मकथा तो नहीं लिखी किन्तु संस्मरण एवं रेखाचित्र के माध्यम से इन्होंने एक उल्लेखनीय पहल अवश्य की थी। हिन्दी आत्मकथा लेखन में प्रतिभा अग्रवाल का नाम सर्वप्रथम आता है जिन्होंने 1990 ई0 में 'दस्तक ज़िन्दगी की' तथा 'मोड़ ज़िन्दगी का' के माध्यम से आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में कदम रखा। इसके पश्चात् 1996 ई0 में कुसुम अंसल द्वारा लिखी आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' राजपाल प्रकाशन से प्रकाशित हुई। अलीगढ़ के रईस घराने में जन्मीं लेखिका अपने आपको परिवार की आंशिक अभिव्यक्ति मानते हुए कहती हैं– "मेरी ये जीवनी हमारे परिवार का कोई ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है, ये मात्र मेरे जीवन का सारतत्व है। वैसे भी मैं अपने परिवार की आंशिक अभिव्यक्ति हूँ।"

आंशिक अभिव्यक्ति से तात्पर्य लेखिका को 10 वर्ष की आयु में उनके निःसंतान बुआ ने गोद लिया था। लगभग 6 वर्ष के पश्चात् इनकी बुआ की गोद भर जाती है जिसके कारण लेखिका को वापस अपने घर आना पड़ता है। वापस आने के बाद अपनी सगी माँ का न होना जिससे उन्हें

This b
deliberation
persons and
papers pres
(National
Council) sp
24-25 Janu
Global Co
System amc

India, a
inculcate v
accordance
economical
local to glo
in the edu
from the b
level shou
Higher Edu
a balance
employabi
Policy is
vocational
from this, I
focus shou
holders. T
achieve a
good and s

This
genuine e
issue reg
global lev
diverse di
Since exp
contribute
ideas so i
the path
policyma

Promoting Sustainable Development through Higher Education: An Overview

Patron:
Prof. Rachna Srivastava
Principal
Vasant Kanya Mahavidyalaya

Editor
Dr. Supriya Singh
Assistant Professor
Vasant Kanya Mahavidyalaya

Co-editor
Dr. Kumud Ranjan
Former Associate Professor
Vasant Kanya Mahavidyalaya

2021

Kala Prakashan

B. 33/33 A-1, New Saket Colony,
B.H.U. Varanasi-5

Enclosure – 14

11. **Need of Reading Literature in Higher Education** 121-124
Dr. Purnima

12. **Skill Development through Experiential Learning: Concept and Implementation in Education System** 125-134
Dr. Jai Singh

13. **Significance of Traditional Knowledge and Indigenous Pedagogy in Higher Education: A Step towards Sustainability** 135-140
Dr.Sunita Dixit

14. **Holistic Development And Sensitizing Stake Holders** 141-147
Anamita Mitra

15. **Value Education and Skills Development in Relation to Indigenous Enterprises** 148-152
Dr. Priyanka Kumari

16. **Human Resource Development and Skilled Unemployment in India** 153-163
Dr. Akhilesh Kumar Rai

17. **विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण को कैसे बेहतर बनायें?** 164-178
सिद्ध नाथ उपाध्याय

18. **मानवीय मूल्यों का व्यवसायीकरण** 179-182
डॉ0 नन्दिनी वर्मा

19. **उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता** 183-188
डॉ0 ममता मिश्रा

20. **भारत में कौशल विकास एवं मूलपरक शिक्षा : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य** 189-192
डॉ0 पूनम पाण्डेय

21. **शैक्षिक परिदृश्य में कलाओं के समन्वय की आवश्यकता** 193-198
डॉ0 सीमा वर्मा

22. **हिन्दी गीतिनाट्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति** 199-204
डॉ0 शशिकला

✦

1.
Introduction

✦Dr. Supriya Singh

✦Assistant Professor, Department of English, Vasant Kanya Mahavidyalaya.

Dr. S. Radhakrishnan says, "The troubles of the whole world including India are due to the fact that education has become a mere intellectual exercise and not the acquisition of moral and spiritual values". According to him "The aims of education is neither national efficiency nor world solidarity, but making the individual feel that he has within himself something deeper than intellect, call it spirit if you like."(Jayapalan 216)

Education is the process by which society deliberately transmits its accumulated knowledge, skills, and values from one generation to another. Education is important for a country to grow, whether economically or socially, because educated people are aware of the socio-economic scenario of the country and can help in the progress of the country. The educated mass somehow or the other knows how to contribute towards the country's well-being. One of the reasons for their awareness is because they have been taught these values in school, colleges and work places.

In contemporary time education is aided with a variety of technology, computers, projectors, internet, and many more. Diverse knowledge is being spread among the people. Everything that can be simplified has been made simpler. Science has explored every aspect of life. There is much to learn and more to assimilate. Internet provides abysmal knowledge. There is no end to it. One can learn everything he wishes to. Every topic has developed into a subject. New inventions and discoveries have revealed the unknown world to us more variedly. Once a new aspect is discovered, hundreds of heads start babbling over it, and you get a dogma from hearsay. Not only our planet but the whole universe has become accessible.

However, the aim of higher education should be developing the right skill in an individual which would lead him to employability and therefore the focus is shifting from books and pen to upgraded skills and internationally recognized qualifications to gain access to decent employment and to ensure India's

के दुख से दुखी और सुख से सुखी होने की अनुभूति करता है, ज्यों–ज्यों हम मनुष्य बनेंगे, त्यों–त्यों कलाओं का साथ बना रहेगा। जीवन को समग्रता, संपूर्णता व सुन्दरता के साथ कैसे जिया जाय? यह मार्ग कलायें ही प्रशस्त करने में सक्षम हैं, क्योंकि कलायें सिर्फ कौशल ही नहीं, जीवनधारा है।

संदर्भ–सूची

1. डॉ० रुचि गुप्ता, भारतीय संस्कृति, पृष्ठ सं०–8, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
2. डॉ० उमाशंकर शर्मा, मानव जीवन का विकास, पृष्ठ सं० 11, इस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
3. डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा, सुन्दरम् (प्रस्तावना) पृष्ठ सं० 12
4. संगीत कला और सौंदर्यकृभगवतशरण शर्मा, पृ० संख्या 267, संगीत कार्यालय हाथरस।
5. द कन्साईज आक्सफोर्ड डिक्सनरी पृष्ठ सं० 124
6. डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा, सुन्दरम् पृष्ठ सं० 9

★

22.

हिन्दी गीतिनाट्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति

+ डॉ० शशिकला
+ असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में अहम योगदान है क्योंकि इन्ही मूल्यों के आधार पर ही संपूर्ण व्यक्तित्व की पहचान की जाती है। प्राचीन काल से ही भारत में गुरुकुलों, आश्रमों एवं पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ मूल्य आधारिल शिक्षा भी दी जाती रही है, किन्तु वैश्वीकरण के इस युग में मूल्य आधारित शिक्षा का ह्रास हुआ है। इसके स्थान पर साप्रदायिकता, जातिवाद, हिंसा एवं असहिष्णुता जैसी प्रवृत्ति ने समाज में मूल्य विघटन को बढ़ावा दिया है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके जीवन मूल्यों से किया जाता है। सफल होने के लिए जीवन में मूल्यों का होना परम आवश्यक है। वैदिक काल से लेकर अब तक अनेक महापुरुष अपने जीवन मूल्य सिद्धान्त पर चलते हुए इतिहास में अमर हो गये। सिद्धान्त एवं मूल्य जीवन को ऊर्जा देते हैं और व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। परिवार हो चाहे समाज सबका संचालन सिद्धान्तों एवं नियमों के अनुरूप होता है और जीवन को अनुशासित बनाये रखने के लिए नियमों का होना अनिवार्य है।

व्यक्ति के लिए सामाजिक मूल्य महत्वपूर्ण है और यह मूल्य व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। कोई व्यक्ति समाज से कितनी आसानी से सामंजस्य कर पायेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसके व्यक्तित्व में मूल्यों का प्रवेश कितना व्यवस्थित रहा है। राष्ट्र के गरिमामयी व्यक्तित्व के लिए उसकी श्रेष्ठ सांस्कृतिक–सामाजिक परम्पराओं, इतिहास के गौरवशाली स्वरूप एवं मूल्यों के प्रति मनुष्य की युगों–युगो की आस्था आवश्यक है। इस आस्था एवं आवश्यकता को बनाये रखने के लिए सबसे बड़ा योगदान साहित्यकारों का रहा है। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द कहते हैं–"मूल्यों के बिना रचना नहीं हो पाती। रचनाओं में व्यक्तित्व की झलक देखने को मिलती है। यह व्यक्तित्व होता है, जो वृहत्तर स्तर पर समाज के हर तबके को अपनी ओर खींचता है। यहीं कारण है कि कोई भी लेखक अपनी लेखनी उठाने से पहले मूल्यों की बुनियाद तैयार करता है। जब मूल्यों की बुनियाद बन जाती है, तब उन मूल्यों को निर्धारित करने की दिशा तय की जाती है।"[1]

मन्नू भंडारी का कथा साहित्य

विचार और दृष्टि

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

सर्वाधिकार सुरक्षित

लेखक व प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन : 978-93-92356-92-6

प्रकाशक : **समकालीन प्रकाशन**
फ्लैट नं. 02, प्रथम तल, अंसारी मार्केट,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
ई-मेल : sales.samkaleenprakashan@gmail.com
दूरभाष : 7827484578

संस्करण : प्रथम संस्करण, 2024
आवरण : अमित
सर्वाधिकार : © डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
मूल्य : सात सौ रुपये मात्र
मुद्रक : आरना इंटरप्राइजेज, गाज़ियाबाद

Mannu Bhandari Ka Katha Sahitya : Vichar Aur Drishti
Edited By: Dr. Surendra Sharma

Rs. 700/-

अनुक्रमणिका

1. मन्नू भंडारी का जीवन : एक संक्षिप्त सिंहावलोकन 17
   -डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
2. मन्नू भंडारी की भाषिक विशिष्टता : 'यही सच है' के बहाने 29
   -डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल
3. स्त्री मन की चितेरी की आत्मकहानी : एक कहानी यह भी 36
   -प्रोफेसर वंदना झा, रवि झा
4. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग 42
   -डॉ. शशिकला
5. मन्नू भंडारी के नाटकों में अभिव्यक्त नारी जीवन का संघर्ष 48
   -डॉ. मोहित मिश्रा
6. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारीवाद 60
   -डॉ. दायक राम
7. 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में नारी की मनोवैज्ञानिक दशा 64
   -डॉ. जितेन्द्र कुमार
8. मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में आत्मीय अभिव्यक्ति 69
   -डॉ. हरप्रीत कौर
9. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी-विमर्श 77
   -डॉ. शाहिद हुसैन
10. मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी पात्रों के स्वभाव 82
    -डॉ. सुप्रिया प्रभाकर जोशी

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में मध्यवर्ग

-डॉ. शशिकला
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

हमारे समाज में उच्च और निम्न वर्ग के साथ एक तीसरा वर्ग भी है- मध्यवर्ग। सामन्ती व्यवस्था के पतन और पूँजीवादी व्यवस्था के उदय के साथ ही मध्यवर्ग का जन्म हुआ और साहित्य इसी मध्यवर्गीय समाज की आवश्यकताओं को उजागर करता है। मध्यवर्गीय परिवारों के आय का स्रोत नौकरी या सामान्य व्यापार होता है। अधिक आय की चाहत में मध्यवर्ग नगरों की तरफ पलायन करता है। भारतीय मध्यवर्ग के विकास के साथ-साथ हिन्दी उपन्यास में भी मध्यवर्ग की प्रखरता देखी जा सकती है। उपन्यास के साथ मध्यवर्ग का दोहरा सम्बन्ध है। एक ओर वह साहित्य का रचनाकार होता है और दूसरी ओर उसका पाठक या आस्वादक। इसीलिए किसी भी भाषा में उपन्यास का उद्भव और विकास मध्यवर्ग के उद्भव और विकास के साथ जुड़ा हुआ है। समकालीन महिला साहित्यकारों में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है। वे स्त्री का विकास वैचारिक स्तर पर चाहती हैं साथ ही उनके साहित्य सृजन का मुख्य उद्देश्य स्त्री पुरुष को समानांतर दर्शाना है।

मन्नू भंडारी नई कहानी आंदोलन का हिस्सा रही हैं, जिसकी शुरुआत कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और भीष्म साहनी जैसे लेखकों ने की थी। मन्नू भंडारी उन लेखिकाओं में से रही हैं, जिन्होंने नए दौर के बनते भारत की महिलाओं के संघर्ष और चुनौतियों को रचा है। उनके दौर की तमाम लेखिकाओं पर इसका असर देखने को मिला। मन्नू जी ऐसे दौर में एक सुधारवादी नजरिया लेकर कथा जगत में आती हैं। जिस दौर में स्त्रियाँ घरों से बाहर निकलीं और कामकाजी बनीं, उनका जीवन बदला और सोच भी बदली, इस यथार्थ और बदलाव को मन्नू जी कई दृष्टिकोणों से देख-समझ रही थीं। उन्होंने कामकाजी महिलाओं के जीवन-प्रसंगों और उनकी समस्याओं को केंद्र में रखकर कई कहानियाँ लिखीं। शिल्प की बनावट परिवेश पर पैनी निगाह और कथ्य की सहजता उन्हें हरेक दौर में प्रासंगिक बनाती है।

लेखिका मन्नू भंडारी 'तीसरा हिस्सा' कहानी में उस मजबूर मध्यवर्गीय आदमी की कथा व्यक्त करती हैं जो आज के समय में हर इंसान की कहानी है। कहानी में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि आज का व्यक्ति रोज अपने शरीर के एक हिस्से को बेचता है, अपने उसूलों पर चलने वाला व्यक्ति घर और बाहर दोनों स्थान पर संघर्ष करता है। कहानी के पात्र शेरा बाबू बड़ी-बड़ी बातों का दंभ भरने के कारण दुविधा में फँस जाते हैं, और उनका जमीर प्रतिदिन मर रहा होता है- "उन्होंने अपने एक हिस्से को मारकर, घिस-घिसकर गैंडे की खाल चढ़ाकर नौकरी के लिए तैयार कर लिया। जब नई नौकरी की तो इस हिस्से को मल्होत्रा को सौंप दिया था- मार, पीट, छील उन्होंने बीवी से समझौता कर लिया,नौकरी से समझौता कर लिया।"

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने न केवल मध्यवर्ग की मजबूरियों को उजागर किया है अपितु यह भी स्पष्ट किया है कि किस प्रकार यह वर्ग अपने ऊपर हुए जुल्मों का बदला अपने से निम्न तबके के लोगों से लेता है, जो उनके अधीन काम करते हैं। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, यह एक परम्परा है जो हम पाते हैं वो ही हम आगे बाटते हैं और अगर इस लेन-देन की प्रक्रिया में कोई बदलाव आया तो बाहर वाले तो बाद में, पहले आपके अपने ही आपकी इंसानियत को अपने पैरों तले रौंद देते हैं जैसा शेरा बाबू की श्रीमती जी ने किया नौकरानी की हिमायत लेने पर- "बारह सौ रुपल्ली पाने वाला आदमी पहले खुद तो इंसान बनकर दिखा दे। इंसानियत की बातें करेंगे।" इस कहानी में तो शेरा बाबू की पत्नी दोषी दिखाई देती हैं। आलोचक इस कहानी को पढ़कर बड़ी आसानी से इस तर्क पर पहुँच जायेंगे कि मध्यवर्गीय व्यक्ति को अपने अलावा किसी और अथवा अपने अधीन कार्य करने वाले व्यक्ति से कोई सरोकार नहीं है। लेकिन यहाँ पर केवल मध्यवर्गीय चेतना को ही स्पष्ट नहीं किया जा रहा है। यहाँ पर यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि मध्यवर्ग का आदमी हो या निम्न वर्ग का इंसान इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

मन्नू भंडारी जी की प्रसिद्धि मुख्यतः मानव मन की सूक्ष्मतम तहों

को टटोलने की कोशिश की है। महाभोज उपन्यास में आपने समकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक वास्तविकता पर तीखा व्यंग्य किया है। इस दौर में मध्यवर्गीय जीवन के द्वंद्व के साथ साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का ईमानदारी के साथ निर्वाह किया है। उपन्यास में जातीय संघर्ष और पूंजीपति वर्ग का परिवर्तनों के प्रति जड़ता उपन्यास में स्पष्टत: दिखाई देता है। जोरावर कहता है- "इन हरिजनों के बाप-दादे हमारे बाप दादों के सामने सिर झुकाकर रहते थे। झुके-झुके पीठ कमान की तरह टेढ़ी हो जाती थी। और ये ससुरे सीना तानकर आँख में आँख गाड़कर बात करते हैं। बरदास्त नहीं होता यह सब हमसें।"[3]

'आपका बंटी' एक कालजयी उपन्यास है, इसे हिंदी साहित्य की एक मूल्यवान उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। इस उपन्यास की खासियत यह है कि यह एक बच्चे की दृष्टि से घायल होती संवेदना का मार्मिक चित्रण करता है, जिसमें मध्यमवर्गीय परिवार में सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति निहायत छोटे से बच्चे के लिए भयावह हो जाती है। शकुन के जीवन के सत्य के माध्यम से लेखिका यह दिखाना चाहती है कि स्त्री की जायज महत्त्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है। नई सदी में नई स्त्री का सत्य यह है कि वह समाज में अपनी जगह बनाते बनाते दाम्पत्य में तनाव आ जाता है जिसका परिणाम बच्चे को भुगतना पड़ता है।"[4]

आज जो हालात बने हुए हैं उसमें एक ही वर्ग के लोग उसी वर्ग का शोषण कर रहे हैं। ऐसे व्यक्ति भी हैं जो कि दूसरे वर्गों के लोगों की सहायता करने की भी कोशिश करते हैं। मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर इसलिए भी कोसा जाता है क्योंकि वर्तमान समय में इस वर्ग के लोग ही अधिक पढ़े-लिखे और बौद्धिक हैं तथा इस नाते उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वह ही समाज में बदलाव ला सकते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत के शहरों में रहने वाले लोग अधिक सुविधा-संपन्न हैं एवं उन्हें अपनी जिम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए। लेकिन मुश्किल वहाँ आती है जहाँ हम केवल इसी वर्ग से आस लगा कर बैठते हैं, क्योंकि समाज में केवल मध्यवर्ग ही नहीं है। इसमें उच्च वर्ग और निम्न वर्ग दोनों ही शामिल हैं। मध्यवर्ग उच्च वर्ग से ज्यादा प्रभावित रहता है और उसकी तरह बनने की कोशिश करता है वहीं दूसरी ओर निम्नवर्ग अपने आप को अपने से ऊपर वाले वर्ग में देखना चाहता है। यह चाह ही इंसान से उसकी इंसानियत छीन रही है तथा उसे ऐसे मुकाम पर लाकर खड़ा कर रही है,

जहाँ पर उसके पास लाचारी एवं हताशा के अलावा कुछ बचता नहीं। इसी हताशा का परिणाम है कि मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी जड़ों से कटता जा रहा है एवं धीरे- धीरे उसकी मानसिकता में बदलाव आ रहा है। इस मानसिकता में बदलाव का सबसे बड़ा कारण यह है कि आज का मनुष्य अपने तक ही सीमित हो गया है। यहाँ तक कि उसे अपने ही रिश्तेदार या घरवाले बोझ जैसे प्रतीत होते हैं। रिश्तों में आई टूटन का चित्रण सबसे अधिक स्वतंत्रता के बाद की कहानियों में हुआ क्योंकि जब इंसान का किसी चीज से विश्वास उठता है तो उसका सीधा असर उसकी मानसिकता पर पड़ता है और इसी के कारण आपसी-संबंधों में भी खटास उत्पन्न होती है। मन्नू भंडारी ने इस खटास को अपनी कहानियों में बखूबी दर्शाया है। एकाकी परिवारों ने संयुक्त परिवारों की छवि को पूरी तरह से बिखेर दिया है। आज की भागती हुई जिन्दगी में हम कोई भी रिश्ता किसी से तब तक ही रखना पसंद करते हैं जब तक कि हमें उससे काम है या हमारा उस रिश्ते से मोहभंग न हो जाए। बाकी सारे रिश्ते हमें बोझिल प्रतीत होते हैं। ऐसा ही कुछ 'अंकुश' कहानी में देखने को मिलता है जहाँ मिसेज चोपड़ा अपने ससुर के घर आने को समय की बर्बादी, अपनी आजादी में अंकुश तथा अपने बच्चों की प्राइवेसी में दखलअंदाजी समझती हैं। ससुर का अचानक घर आ जाना, अपने पौता-पौती को सही शिक्षा देना मिसेज चोपड़ा को रास नहीं आता क्योंकि यह उनकी अपनी जिन्दगी है। कोई भी इंसान कभी भी मुंह उठाकर चला आये और उनके बच्चों को नसीहत देकर चला जाए, यह उन्हें कतई गवारा नहीं है।

'अंकुश' कहानी में कुछ ऐसा नहीं है जो हमने पहले सुना या देखा न हो लेकिन इसका अंत यह बता जाता है कि समय चाहे कितना ही बदल जाए लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें अगर बदल दिया जाए तो उसमें केवल हमारा ही नहीं आने वाली पीढ़ी का भी नुक्सान होगा। ससुर की कही बात मिसेज चोपड़ा को तब समझ आती है जब उनकी खुद की बेटी उनसे छुपकर किसी और से बातें कर रही होती है- "उनका बस चले तो मुझे अपने पल्ले से बाँधकर रखें। पता नहीं क्या समझती हैं अपने आप को। रीयली शी इज बिकमिंग ए हैडेक दीज डेज।"[5]

आलोचक चाहे कितना ही कह लें कि मध्यवर्ग की मानसिकता में परिवर्तन आया है, वो बदल गया है। लेकिन असल बात तो यह है कि बदलाव किसी खास वर्ग के लोगों में नहीं बल्कि इंसान के सोचने-समझने

के तरीकों में आया है। वर्ग तो केवल बहाना है एक दूसरे पर दोषारोपण करने के लिए, असलियत तो यह है कि किसी भी वर्ग का व्यक्ति जब जिन्दगी में कोई मुकाम हासिल कर लेता है और जब उसका एक वर्ग से दूसरे वर्ग में हस्तांतरण होता है तो वह व्यक्ति भी हू-ब-हू उसी वर्ग की भाषा बोलने लगता है। इसके केंद्र में मध्यवर्ग नहीं बल्कि सारे वर्ग आते हैं। मन्नू भंडारी की कहानियां केवल मध्यवर्गीय मानसिकता को ही नहीं दर्शा रही हैं बल्कि इस वर्ग के साथ जुड़े दूसरे वर्ग की मानसिकता के ऊपर जमी हुई धूल को भी हटाती हैं। 'खोट्टे सिक्के' के मिस्टर खन्ना हों या उनकी टकसालों में काम करने वाले मजदूर दोनों के ही पक्षों को मन्नू भंडारी सामने रखती हैं। वह यह बताती हैं कि वर्ग चाहे जो भी हो जरूरत एक दूसरे की सबको है फर्क है केवल हैसियत का। अगर यह हैसियत का फर्क मिट जाए तो लोग शायद एक-दूसरे को समझने लगें। 'खोट्टे सिक्के' के मिस्टर खन्ना जिस तरह मजदूरों के साथ पेश आते हैं वह अपने आप में असहनीय है। टकसालों में जो मजदूर दिन-रात खप रहे हैं उनकी जरूरत है खन्ना जैसे लोगों को। लेकिन दिक्कत वहां आती है जब मजदूर या जरूरत मंद लोग अपने मूल्य को नहीं समझते हैं। जिस दिन इंसान अपनी कदर खुद करने लगेगा, उस दिन दो वर्गों के बीच का भेदभाव एवं एक दूसरे के जैसा बनने की होड़, यह खुद समाप्त हो जायेगी। क्योंकि अगर मिल मालिक मजदूर को रोजगार देते हैं तो मजदूरों की वजह से ही मिल चलती है। इस बात का एहसास खन्ना जैसे लोगों को करना बहुत जरूरी है- "एक नौकरी के लिए दस लोगों का टूटना" इस बात का संकेत है कि स्वतंत्रता के 68 साल बाद भी लोग सही मायनों में इसका मतलब नहीं समझ सके।

मन्नू भंडारी की कहानियां केवल आधुनिकता, मध्यवर्गीय मानसिकता के पहलुओं को ही सामने नहीं लातीं बल्कि इनकी कहानियां समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तनों को भी बखूबी चित्रित करती हैं। इनकी कहानियों की थीम एक साधारण से पात्र की सामान्य सी कथा से शुरू होती है लेकिन अंत तक पहुँचते-पहुँचते अपने आप विशिष्ट हो जाती है। इनकी कहानियों में एक टकराहट है, एक ऐसी टकराहट जिसकी गूँज कभी स्त्री-पुरुष संबंधों में सुनाई देती है तो कभी माँ-बेटी के रिश्तों में। मन्नू भंडारी की हर कहानी अपने आप में विशिष्ट है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मन्नू भंडारी ने हर तरह की कहानियां लिखी हैं। उनकी

कहानियों में वर्तमान समय की हर समस्या का चित्रण किया गया है। बात चाहे प्रेम की हो 'यही सच है' या स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई की 'इंसा के घर इंसान' या फिर परम्पराओं की 'त्रिशंकु' हर कहानी में मन्नू भंडारी ने उन समस्याओं को चित्रित किया है जो रोज हमारे आस-पास घटित होती हैं लेकिन उन पर हमारी नजर नहीं जाती। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि युग चाहे कोई भी रहे, समस्या चाहे कैसी भी हों लेकिन अगर इंसान ने लड़ना छोड़ दिया तो सब खत्म हो जाएगा। मन्नू भंडारी खुद मध्यवर्ग परिवार से हैं तो उनकी ज्यादातर कहानियां इसी वर्ग के इर्द-गिर्द घुमती हैं लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनकी कहानी की थीम भले ही किसी विशेष वर्ग से शुरू होती है लेकिन उनके कथानक का केंद्रीय बिंदु सामाजिक समस्या है और समाज में कोई एक विशेष वर्ग नहीं बल्कि सभी वर्ग आते हैं। इसलिए मन्नू भंडारी की कहानियाँ एक आम-आदमी की कथा को चित्रित करती हैं चाहे वो पुरुष हो या स्त्री।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय परिवारों का विखंडन दिखाई देता है, किन्तु स्त्रियाँ अपने अधिकारों को लेकर सचेत हैं। उन्होंने कामकाजी महिलाओं के जीवन-प्रसंगों, उनकी समस्याओं को केंद्र में रखकर कई कहानियाँ लिखीं। इन्होंने बहुत अधिक तो नहीं लिखा, पर जो लिखा उसमें जिंदगी का यथार्थ इतनी सहजता, आत्मीयता और बारीकी से झलकता है कि वह पाठकों को छू लेता है। वह अपनी कहानियों में पात्रों के भीतरी कक्ष के हर संवेदनशील कोने को बेहद मार्मिकता और प्रामाणिकता से खंगालती हैं।

सन्दर्भ :

1. मन्नू भंडारी- 'सम्पूर्ण कहानियाँ- तीसरा हिस्सा', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.-458
2. मन्नू भंडारी- 'सम्पूर्ण कहानियाँ- तीसरा हिस्सा', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.-456
3. मन्नू भंडारी-'महाभोज', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.-156
4. मन्नू भंडारी-'आपका बंटी ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.-56
5. मन्नू भंडारी-'सम्पूर्ण कहानियाँ- 'तीसरा हिस्सा', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.-118

स्वराज के सार

संपादक द्वय :
डॉ. आशीष कुमार साव
डॉ. अमित कुमार दीक्षित

ISBN No :- 978-93-93551-00-9

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस. प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 111 - ए.जी-एफ, आनन्द पर्वत, इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110005

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

●

मूल्य : 599.00 रुपये (पेपर बैक)
मूल्य : 699.00 रुपये (हार्ड कवर)
प्रथम संस्करण 2023 © संपादक द्वय
मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

Book Name : SWRAJ KE SWAR
Edit by : Dr. ASHISH KUMAR SHAW & Dr. AMIT KUMAR DIXIT

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महात्मा गाँधी... 01
   - डॉ. आशीष कुमार साव, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर
   कोलकाता, पश्चिम बंगाल
2. वीर सपूत क्रांतिकारी शहीद-ए-आज़म भगत सिंह... 13
   - डॉ. अमित कुमार दीक्षित, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर
   कोलकाता, पश्चिम बंगाल
3. दास्तान-ए-चन्द्रशेखर आज़ाद... 19
   - डॉ. मन्जु तोमर, सहायक प्रोफेसर, एम.डी.एस.डी. कॉलेज
   अंबाला शहर, हरियाणा
4. आज़ाद हिन्द की संकल्पना... 28
   - विक्रम कुमार साव, इंस्पेक्टर, अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क
   कोलकाता, पश्चिम बंगाल
5. पंडित जवाहरलाल नेहरू... 37
   - डॉ. राधिका के.एन, वरिष्ठ साहित्यकार
   कोज़िकोड़, केरल
6. बाल गंगाधर तिलकः स्वतंत्र सेनानी... 43
   - दीपिका गहलोत, लेखिका
   पुणे, महाराष्ट्र
7. स्वतंत्र भारतः एक अखंड भारत... 48
   - निशा प्रसाद, प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक
   कोलकाता, पश्चिम बंगाल
8. बेगम हजरत महलः प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना... 58
   - डॉ. रश्मिशील, लेखक
   लखनऊ, उत्तर प्रदेश
9. असम की रानी लक्ष्मीबाईः कनकलता बरूआ... 67
   - डॉ. अनामिका जैन, असिस्टेंट प्रोफेसर
   जैन कन्या पाठशाला पी.जी. कॉलेज, मजुफ्फरनगर, बिहार
10. एशिया की पहली गौरवशाली महिला कैप्टन "डॉ. लक्ष्मी सहगल".. 77
   - आशीष भारती, लेखक/कवि/पत्रकार
   साहरनपुर, उत्तर प्रदेश

56. स्वतंत्रता सेनानीः कमला नेहरू... 422
- निर्मला विनवाल, लेखिका
काशीपुर, उत्तराखंड
57. बंगाल की महान स्वतंत्रता सेनानी बीना दास... 425
- डॉ. शशिकला, एसोसिएट प्रोफेसर, वसंत कन्या महाविद्यालय
वाराणसी, उत्तर प्रदेश
58. बंग क्रांति का सूर्यः क्रांतिकारी सूर्य सेन... 432
- नंदिनी सिंह, शोधार्थी
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
59. राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी... 439
- सोनाली राजपूत, शोधार्थी, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय
गया, बिहार
60. सर श्री अरविंद घोष... 443
- डॉ. वेवी सुमंगला पी.वी, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, माही
61 तात्या टोपे... 455
- डॉ. राम कांडियन, लेखिका
माहे, पांडुचेरी
62. 1857 की क्रांति के महानायक नाना साहब... 460
- अर्जुन सिंह, शिक्षक एवं सोशल एक्टिविस्ट
पिथौरागढ़, उत्तराखंड
63. महादेव गोविन्द रानाडे... 470
- आकाश पुष्कर, लेखिका
बरेली, उत्तर प्रदेश
64. असम की महान विरांगना पुष्पलता दास... 478
- राजलक्ष्मी जायसवाल, शोधार्थी
राँची, झारखण्ड
65. सावित्री बाई फुले... 485
- डॉ. रजनी धाकरे, लेखिका
मेनपुरी, उत्तर प्रदेश
66. महान क्रांतिकारी यतीन्द्र मोहन सेनगुप्त... 494
- रीतेश रावत, लेखक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

बंगाल की महान स्वतंत्रता सेनानी: बीना दास

डॉ. शशिकला, एसोसिएट प्रोफेसर,
वसंत कन्या महाविद्यालय
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

शोध सार :

भारतीय इतिहास के गौरव के निर्माण में जितना योगदान पुरुषों ने दिया। उससे कहीं अधिक सहयोग स्त्री शक्ति ने दिया है। अनादिकाल से यह सर्वविदित है की जब जब देवासुर संग्राम छिड़ा है राक्षसी शक्ति के समूल नाश के लिए दैवी शक्ति का आश्रय लिया गया है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में स्त्री शक्ति सदैव अग्रणी रही हैं। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं का नाम विशेष उल्लेखनीय रहा है। गाँधी युग में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आन्दोलन में परिवर्तित हो गया, पुरुषों के साथ महिलाएं भी इसमें पीछे नहीं रहीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की अपितु गिरफ्तारी देने में भी पीछे नहीं रहीं। इन महिलाओं में जिन्होंने आजादी को धार दी उनमें कस्तूरबा गाँधी, विजयलक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, मीरा बेन, एनी बेसेंट, मैडम भीकाजी कामा इत्यादि परिचित नाम थे। कुछ नाम ऐसे भी थे। जो गुमनामी के अँधेरे में गुम हो गये, ऐसी ही गुमनामी की जीवन जीने वाली थीं क्रान्तिकारी बीना दास जिन पर हम विचार करेंगे।

बीज शब्द :

स्वतंत्रता सेनानी, आन्दोलन, इतिहास, क्रान्तिकारी, कारावास, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, ऋषिकेश ।

मूल आलेख :

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में भारतीय महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। जिसमें स्वतंत्रता सेनानी बीना दास का नाम भी प्रमुखता से लिया जाता है। "क्रांतिकारी बीना दास (Bina Das) का जन्म 24 अगस्त 1911। को कृष्णानगर में हुआ था। उनके पिता बेनी माधव दास सुप्रसिद्ध ब्रह्म समाजी और प्रसिद्ध अध्यापक थे, महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचंद्र बोस भी उनके प्रिय छात्र रह चुके है। बीना दास सामाजिक कार्यकर्ता सरला देवी की पुत्री थीं। वे कोलकाता के सेंट जॉन डोसेसन गर्ल्स हायर सैकण्डरी स्कूल की छात्रा रही हैं। बीना दास कोलकाता में महिलाओं के लिए संचालित की जाने वाली अर्ध-क्रान्तिकारी संगठन छात्र संघ की सदस्या थीं, जिसके लिए उन्हें नौ वर्ष के लिए सख्त कारावास की सजा सुनाई गई।"[1] बीना की बड़ी बहन कल्याणी दास भी स्वतंत्रता सेनानी थीं। अपने स्कूल के दिनों से ही दोनों बहनों ने अंग्रेजों के खिलाफ होने वाली रैलियों और मोर्चों में भाग लेना शुरू कर दिया था। इनकी माता सरला देवी चूँकि "सामाजिक कार्यकर्ता थीं इसलिए वह भी सार्वजनिक कार्यों में बहुत रुचि लेती थीं और निराश्रित महिलाओं के लिए उन्होंने 'पुण्याश्रम' नामक संस्था भी बनाई थी। साल 1928 में अपनी स्कूल की शिक्षा के बाद वे महिला छात्र संघ में शामिल हो गयीं। यह संघ ब्राह्मो गर्ल्स स्कूल, विक्टोरिया स्कूल, बेथ्यून कॉलेज, डायोकेसन कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पढ़ने वाली छात्राओं का समूह था। बंगाल में संचालित इस समूह में 100 सदस्य थे, जो भविष्य के लिए क्रांतिकारियों को इसमें भर्ती करते और साथ ही ट्रेनिंग भी देते थे।"[2] संघ में सभी छात्राओं को लाठी, तलवार चलाने के साथ-साथ साइकिल और गाड़ी चलाना भी सिखाया जाता था। इस संघ में शामिल कई छात्राएँ अपना घर छोड़कर 'पुण्याश्रम' में रहती थीं, जिसका संचालन बीना की माँ सरला देवी करती थीं। हालांकि, यह छात्रावास बहुत सी क्रांतिकारी गतिविधियों का गढ़ भी था। यहाँ के भंडार घर में स्वतंत्रता

सेनानियों के लिए हथियार, बम आदि छिपाए जाते थे। साथ ही वे टिन के [illegible] क्रांतिकारियों के लिए बम आदि भी लाती थीं।

बचपन से ही क्रान्तिकारी स्वभाव की होने के कारण 6 फरवरी 1932 को कोलकाता विश्वविद्यालय में जब दीक्षांत समारोह का उत्सव मना रहा था, उस समय मुख्य अतिथि के रूप में बंगाल के अंग्रेज लाट [illegible] जैक्सन थे। गवर्नर ज्यों ही भाषण देने लगे, उस अवसर पर कुमारी बीना दास भी उपाधि लेने आईं थीं, जो अपनी सीट पर से तेजी से उठीं और गवर्नर के सामने जाकर रिवाल्वर चला दीं। उन्हें आता देखकर गवर्नर थोड़ा झुकते हुए पीछे हट गया जिससे निशाना चूक गया, गोली गवर्नर के कान के पास से निकल गई और गवर्नर मंच पर लेट गया। इतने में लेफ्टिनेन्ट कर्नल सुहरावर्दी ने दौड़कर बीना दास का एक हाथ से गला दबा लिया और दूसरे हाथ से पिस्तौल वाली कलाई पकड़ कर सीनेट हाल की छत की तरफ कर दी फिर भी वह लगातार गोलियाँ चलाती गई, जब तक पिस्तौल की गोलियाँ खत्म नहीं हो गई किन्तु सभी गोलियाँ चूक गईं। उन्होंने पिस्तौल फेंक दी और भरी अदालत में उन्होंने एक साहसपूर्ण बयान दिया कि वह अंग्रेजों से घृणा करती हैं। "उनके ऊपर मुकदमा चला जिसकी सारी कारवाई एक ही दिन में पूरी करके बीना दास (Bina Das) को नौ वर्ष की कड़ी कैद की सजा दे दी गयी।"[3] अपने अन्य साथियों का नाम बताने के लिए पुलिस ने उन्हें बहुत सताया, पर बीना ने मुंह नहीं खोला, और सजा मिलने से पहले कोर्ट में कहा- "मैं स्वीकार करती हूँ, कि मैंने सीनेट हाउस में अंतिम दीक्षांत समारोह के दिन गवर्नर पर गोली चलाई थी। मैं खुद को इसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार मानती हूँ। अगर मेरी नियति मृत्यु है, तो मैं इसे अर्थपूर्ण बनाना चाहती हूँ, सरकार की उस निरंकुश प्रणाली से लड़ते हुए जिसने मेरे देश और देशवासियों पर अनगिनत अत्याचार किये हैं।"[4]

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने महिलाओं को राजनीतिक मंच प्रदान किया और भारतीय महिलाएं कांग्रेस के वार्षिक

भारत में हुआ जिसके लिए इस अग्नि-कन्या ने अपना सब कुछ [illegible] दिया था। देश को इस मार्मिक कहानी को याद रखते हुए, देश ने ही [illegible] लेकिन अपनी इस महान स्वतंत्रता सेनानी को सलाम करना चाहिए।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि बीना दास उस समय की सबसे निडर क्रांतिकारियों में से एक थीं। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया था। वे बंगाल की कई युवतियों के लिए प्रेरणा स्रोत थीं। जिस स्वतंत्रता सेनानी ने देश के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया उन्हें अपने जीवन चर्या को चलाने के लिए शिक्षिका का कार्य भी करना पड़ा और अन्तत: उनकी मृत्यु गुमनामी के अँधेरे में होती है। यह सब उस आज़ाद भारत में हुआ, जिस देश की स्वतंत्रता के लिए इस अग्नि-कन्या बीना दास ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया था। अब उनकी देह के साथ उनकी कहानी भी अनकही, अनसुनी रह गयी है। देश को इस कहानी को स्मरण करना चाहिए और इस महान स्त्री को उचित आदर और सम्मान मिलना चाहिए

सन्दर्भ सूत्र :

1. ग्लैसगोव हेराल्ड, 8 फ़रवरी 1932, पृष्ठ 11
2. https://www.thelallantop.com/oddnaari/post/bina-das-the-legendary-freedom-fighter-who-shot-governor-of-bengal
3. रिडींग ईगल, 15 फ़रवरी 1932
4. बीना दास की बहन कल्याणी दास के संस्मरण 'जीवन अध्याय से
5. भारत सरकार के भारतीय संस्कृति पृष्ठ से

6. सेनगुप्त, सुबोध चन्द्र और अंजली बसु (ed.) (1988) सांसद बंगाली चरिताभिधान (बंगाली में), कोलकाता: सहित्य सदन, पृष्ठ 663
7. भारत सरकार के भारतीय संस्कृति पृष्ठ से
8. प्रोफ़ेसर सत्यव्रत घोष के लेख 'फ्लैश बैक :बीना दास -रिबोर्न' से

साहित्य और समाज

साहित्य और समाज

सम्पादक : प्रसादराव जामि

ISBN : 978-81-19110-25-4

प्रकाशक :- शोध प्रकाशन

प्रकाशक का पता :- हिसार(हरियाणा)

प्रिंटर :- खालसा प्रिंटर

संस्करण :- प्रथम (2023)

कॉपीराइट :- शोध प्रकाशन, हिसार

(लेख में दिए विचार लेखकों के अपने विचार है। इसके लिए प्रकाशक या सम्पादक जिम्मेदार नहीं है। विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र हिसार, हरियाणा होगा।)

ISBN : 978-81-19110-25-4

अनुक्रमणिका

क्र सं	अध्याय	पृष्ठ
	अनुक्रमणिका	iii
	सम्पादक की कलम से	vii
1.	साहित्य और समाज — प्रसादराव जामि	1-7
2.	वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा — शाईस्ता सना	8-11
3.	प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसान जीवन के दर्शन — ज्योति अजय सिंह	12-18
4.	भाषा के आपसी संबंध — डॉ. पुष्पा देवी	19-25
5.	भाषा और संस्कृति का संबंध — डॉ. गायत्री बैरवा	26-32
6.	श्री क्षेत्र राजा राजेश्वरा मंदिर — सुनीता प्रयाकर राव	33-35
7.	संस्कृत भाषा की प्राचीन और वर्तमान स्थिति — डॉ सुनील कुमार चतुर्वेदी, कृष्ण बहादुर सिंह	36-39
8.	साहित्य और समाज — हरिदास बड़ोदे 'हरिप्रेम'	40-42
9.	इक्कीसवीं सदी की कहानियों में स्त्री चेतना - "गीताश्री, जयश्री राय और मालती जोशी के कहानियों के विशेष संदर्भ" — बिभूति बिक्रम नाथ	43-48
10	त्यौहार अर्थ एवं महत्व — डॉ० हरीश कुमार यादव	49-52

ISBN : 978-81-19110-25-4

12.	[illegible] समाज	सुमित कुमार	53-56
13.	प्रेम और सौंदर्य के अनुगायक सुमित्रानंदन पंत	डॉक्टर सपना भूषण	57-62
14.	हिंदी साहित्य अध्ययन- अध्यापन : समस्याएं और समाधान	प्रोफेसर मीना यादव	63-64
15.	समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिक जीवन - मूल्य	राजलक्ष्मी जायसवाल	65-71
16.	साम्प्रदायिकता, विभाजन की त्रासदी और फिल्म "तमस"	डॉ. पलाशी बिस्वास	72-77
17.	जहाज का पंछी में समाज एवं मनोविज्ञान	ऋषिकेश श्रीवास्तव	78-86
18.	साहित्य की अवधारणा	डॉ०घनश्याम भारती	87-89
19.	सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रगतिवादी तत्व	शैलेन्द्र कुमार	90-98
20.	हिंदी भाषा और लिपि का वैज्ञानिक स्वरूप	रजिया सुलताना	99-103
21.	साहित्य में व्यक्तित्व का मनोविज्ञान	डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर	104-113
22.	हिन्दी दलित साहित्य की चयनित कहानियों और सामाजिक विषमता	डॉ० तपस्या चौहान	114-119
23.	एकल एवं संयुक्त परिवार बनाम सामाजिक मूल्य	सुरेश लाल श्रीवास्तव	120-122
24.	'अजनबी जज़ीरा' उपन्यास का आलोचनात्मक अध्ययन	प्रियंका देवी	123-128

ISBN : 978-81-19110-25-4

25.	स्त्री-मुक्ति प्रश्न और भोजपुरी लोकगीत	डॉ0 शशिकला	129-133
26.	साहित्य और समाज	शारदा कनोरिया	134-135
27.	साहित्य और समाज	वी एन वी पद्मावती	136-138
28.	साहित्य और समाज	डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे	139-141
29.	हिंदी और मराठी महिला दलित आत्मकथाओं में सामाजिक समस्या	तॉडचिकर मिना बाबुराव	142-143
30.	संस्कार	मंजू वशिष्ट	144-145
31.	साहित्य एवं सामाजिक परिवर्तन	डॉ. आशा कुमारी डॉ. राजेश	146-149
32.	साहित्य और समाज	डॉ एम राज्यलक्ष्मी	150-152
33.	उषाकिरण खान के उपन्यासों में चित्रित समाज	अलीशा बेगम. एन.	153-157
34.	समाज और साहित्य में स्त्री–लेखन	डॉ० स्वप्ना उप्रेती	158-163
35.	जीवन का आधार हमारे संस्कार	डा0 रेनू राय	164-168
36.	राष्ट्रउन्नायक स्वामी दयानन्द विरचित सत्यार्थप्रकाश में वर्णित आर्यावर्त्त के विभिन्न मत–मतान्तरों का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ0 प्रभा चौधरी	169-177
37.	समाज और साहित्य का संबंध	निघोंट अर्चना महादेवराय	178-183

ISBN : 978-81-19110-25-4

स्त्री-मुक्ति प्रश्न और भोजपुरी लोकगीत

डॉ0 शशिकला, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

बसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी

Email- shashi.bhu[illegible]@gmail.com

लोक मानस में मनोरंजन का मुख्य आधार लोक गाथाएं होती हैं। भारत के कोने कोने के लोक जीवन में लोक गाथाएं बिखरी पड़ी हैं। अकेले भोजपुरी लोक में आल्हा, लोरिकायन, सोरठी बृजाभार, बिहुला विषधरी, गोपीचंद, राजा भरथरी, कुंवर विजयमल, राजा ढोलन, नयकवा बनजारा, चनैनी, बाला लखंदर आदि अनेक लोकगाथाएं प्रचलित हैं। अनेक लोक कवियों, लोक कलाकारों और लोक नाटककारों ने अपनी रचनाओं से इस लोक साहित्य को समृद्ध किया है। भिखारी ठाकुर ने बिदेसिया के माध्यम से बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्सों में लोक जीवन पर जो असर डाला उसका अन्यत्र उदाहरण मिलना कठिन है। भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। रामविलास शर्मा ने इस काव्य को लोक जागरण का काव्य कहा है। यह लोक जागरण का काव्य ही वास्तव में लोक काव्य ही है। इसे लोक साहित्य के भीतर रखा जाना चाहिए। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस विषय में गंभीर विवेचन करते हुए लिखा है-"इन मध्य युग के संतों का लिखा हुआ साहित्य-कई बार तो वह लिखा भी नहीं गया, कबीर ने तो 'मसि कागद' छुआ ही नहीं था-लोक साहित्य कहा जा सकता है या नहीं? क्यों कबीर की रचना लोक साहित्य नहीं है? सच पूछा जाय तो कुछ थोड़े से अपवादों को छोड़कर मध्ययुग के संपूर्ण देशी भाषा के साहित्य को लोक साहित्य के अंतर्गत स्वीकार लाया जा सकता है।"[1] महापंडित राहुल सांकृत्यायन की तो स्पष्ट मान्यता है कि-"हमारी सम्मति में हिन्दी साहित्य के वीरगाथा काल तथा भक्तिकाल की अधिकांश रचनाओं को लोक साहित्य में अंतर्भुक्त किया जा सकता है।"[2]

वैश्विक स्तर पर स्त्रियाँ जहाँ स्वतंत्रता, समानता, नागरिक अधिकारों के लिए आन्दोलन कर रही थीं, वहीं भारतीय स्त्रियाँ घरेलू उत्पीड़न, दहेज-प्रथा, यौन-उत्पीड़न, जाति-उत्पीड़न आदि के खिलाफ आन्दोलन कर रही थीं अर्थात् उनको जीवन जीने के न्यूनतम अधिकार भी नहीं मिले हुए थे। स्वतंत्रता, समानता, आत्मसम्मान की बात करना तो उनसे कोसों दूर था। जबकि औरतों की सामाजिक जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएँ वैश्विक स्तर पर लगभग समान ही थीं। उनका काम बच्चे पैदा करना, घर सँभालना आदि ही था। घर का सारा बोझ अपने सिर पर लेने के बावजूद भी उनके प्रति यही धारणा थी कि वो कमजोर हैं। राजेंद्र यादव ने भारतीय समाज की स्त्रियों के सन्दर्भ में लिखा है-"मूलतः इस समाज में स्त्री की अपनी कोई जाति नहीं है, न नाम और न अपनी इच्छा, हर जाति या रस्म ने एक दूसरे की स्त्रियों को लूटा है। छीना या अपनाया है। वह आजन्म किसी की बेटी, किसी की पत्नी और किसी की माँ के रूप में जानी जाती है। उसी से उसके घर और प्रतिष्ठा बनते हैं। यहाँ तक की पर्दे के नाम पर उसका चेहरा भी उससे छीन लिया गया है। वह सिर्फ बेनाम, बेचेहरा और बेपहचान औरत है।"[3]

ISBN : 978-81-19110-25-4

[illegible] समाज में भी स्त्री शिक्षा की शुरूआत इसी एजेण्डे के साथ प्रारम्भ हुई कि वह पढ़-लिखकर घर-बार अच्छी प्रकार [illegible] और बच्चों का पालन-पोषण भली-भाँति कर सकेगी। चूँकि भारतीय समाज में भी यह माना जाने लगा था कि स्त्री पति[illegible] की धुरी है, वह पढ़ी-लिखी रहेगी तो अधिक सुसंस्कृत गृहिणी रहेगी, और घर की जिम्मेदारियों का निर्वहन व हिसाब-किताब भली [illegible] कर सकेगी, बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देगी, उन्हें जागरूक नागरिक बना सकेगी, बच्चों का भविष्य संवारेगी इत्यादि। उसके [illegible] के व्यक्तित्व के विकास, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता के लिए उसे शिक्षा नहीं दी जाती थी। भोजपुरी समाज में भी [illegible] ने रूढ़ियों, कुप्रथाओं, संकुचित मनोवृत्तियों पर प्रश्न-चिन्ह लगाये, और स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार, अमानवीय व्यवहार, [illegible] का विरोध किया। रविशंकर उपाध्याय लिखते हैं कि-"पति-पत्नी का पारस्परिक सम्बन्ध, दाम्पत्य प्रेम का [illegible] चित्र, [illegible] की दुर्दशा, देवर की दुष्चरित्रता, भवहि और भसुर का अनुचित सम्बन्ध, क्रूर पति की छोटे से अपराध के लिए भी स्त्री को [illegible], ससुर का बहू के प्रति कठोर व्यवहार आदि का वर्णन भोजपुरी समाज के प्रति वितृष्णा तथा घृणा पैदा कर देता है।"[4] [illegible] लेकिन जब हम उनके परस्पर स्नेह, लगाव और एक दूसरे की परवाह को देखते हैं तो उनसे हृदय गद्गद् हो जाता है। दूसरा पक्ष यह है कि आधुनिकता के साथ ग्रामीण समाज या लोक समाज को देखने पर हमें कहीं न कहीं आधुनिकता और ग्रामीण संस्कृति में विरोधाभास नजर आता है क्योंकि ग्रामीण संस्कृति अपनी पुरातन मान्यताओं के साथ जीवित रहती है जबकि आधुनिकतावादी दृष्टिकोण इन मान्यताओं, रूढ़ियों का विवेचन, विश्लेषण करके या तो उन्हें तोड़ देता है या फिर उसका रूप बदल देता है और यह [illegible] ग्रामीण समाज अपनी संस्कृति में करने नहीं देता है।

भोजपुरी समाज की प्रकृति पुरूष सत्तात्मक है। नारी का पूरा जीवन पुरूष के इर्द-गिर्द ही घूमता नजर आता है। राम-सीता-लक्ष्मण जब वन में चले गये हैं। उस सन्दर्भ में एक भोजपुरी गीत है जिसमें घनघोर वर्षा हो रही है और माता कौशिल्या चिंतित हैं, वह [illegible] रही है-

"राम के भीजे मुकुटवा

लखन सिर पटुका हो राम

मोरी सीता के भीजे सेनुरवा

लवटि घर आवई हो राम।"[5]

इस गीत में एक माँ की अपने बच्चों के प्रति ममता स्वाभाविक है, उनका फिक्र करना स्वाभाविक है, किन्तु ध्यान देने वाली बात यह है कि सीता को जब याद करती हैं तब प्रत्यक्ष रूप से नहीं उनके सिंदूर के माध्यम से याद करती हैं अर्थात् सीता नहीं भीग रही है उनका सिंदूर भीग रहा है अर्थात् फिर से राम की यानी पुरूष की प्रधानता हमें दिखाई देती है। सीता का महत्व सीता होने के कारण नहीं बल्कि सीता का महत्त्व राम की पत्नी होने के कारण है। सीता के दुबारा वन-गमन को तुलसी और वाल्मीकि ने जितना महत्व नहीं दिया है उससे कहीं अधिक महत्व ग्रामीण स्त्रियों ने अपने गीतों में दिया है, क्योंकि उनका जीवन भी सीता जी की तरह त्यागमय है। वह अपने माँ-बाप का घर छोड़कर सुख-चैन के सपने लिए ससुराल आती है किन्तु ससुराल पक्ष में अपमान के साथ जीवन भर का वनवास ही मिलता है। महल रहते हुए भी कुटिया में रहने के समान ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। अपने बच्चों का लालन-

[illegible] भी अकेले ही अभाव में करना पड़ता है, सब करने के बावजूद भी सम्मान नहीं मिलता है और अन्तत: सीता जी के समान [illegible] धरती का शरीर माटी में मिल जाता है।

"अइसने पुरूखवा के मुँह नाहीं देखबों

सीरीराम देले बनवास रे

फटि जइती धरती, अलोप होई जइतीं

अब ना देखबि संसार रे।"[6]

जिस प्रकार अनजान व्यक्ति के कहने पर राम ने सीता को बनवास दे दिया, ठीक यहीं स्थिति भोजपुरी समाज में भी देखने को मिलता है कि रिश्ते में भरोसे के अभाव के कारण पति-पत्नी एक दूसरे पर शक करने लगते हैं और ऐसी स्थिति में हर हाल में भुगतना स्त्री को ही पड़ता है। पर आज की कुछ भोजपुरी स्त्रियाँ अपने हक के प्रति जागरूक दिखाई देती हैं। वह स्त्रियों को पहनाये गये लाज, शर्म, हया, घर की सम्पति, घर की इज्जत के चोंगे को उतार कर फेंक चुकी हैं। वह स्त्रियों की पारम्परिक छवि घर में दुबक कर रहने वाली, सब कुछ सहकर भी मुँह बन्द रखने वाली, घर की इज्जत का सारा ठेका अपने सिर पर लेने वाली छवि को तोड़ चुकी है। एक गीत में अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के विरोध में वह कहती है-

"सुन हो सखि हम अदालत करबों

पहिली अदालत बक्सर में करबो,ससुर राउर माला उतार हम लेबो

* * *

चौथी अदालत कलकत्ता में करबो, सईयां राउर सेखी उतार हम लेबो।"[7]

अर्थात् स्त्री मुक्ति की बात जब हम करते हैं तो स्त्री के लिए आर्थिक मुक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि जब कोई भी व्यक्ति स्वावलम्बी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो जाता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह व्यक्ति अधिक स्वतंत्र हो जाता है। वह किसी भी विषय पर निर्णय ले सकता है तथा अपना मत भी रख सकता है, उस व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास का अवसर मिलता है। आर्थिक मुक्ति में ही स्त्री की वास्तविक मुक्ति छिपी हुई है। भोजपुरी समाज ऐसा है जिसमें स्त्री-पुरूष में काम का बँटवारा इस तरह हुआ है कि घर के अंदर का कार्य स्त्री का है और घर के बाहर का कार्य पुरूष द्वारा किया जाता है। प्राय: कमा कर लाने का कार्य पुरूष द्वारा ही किया जाता है। चूँकि घर की आमदनी और खर्चों का हिसाब रखना पुरूष का कार्य है इसलिए स्त्री यदि कमाती भी है तो उसे खर्च करने का अधिकार उसे नहीं है। वह अपनी इच्छानुसार और आवश्यकतानुसार स्वयं का पैसा भी खर्च नहीं कर सकती, उसका भी हिसाब किसी न किसी पुरूष के द्वारा लिया जाता। इस प्रकार

आर्थिक-मुक्ति का अर्थ सिर्फ अर्थोपार्जन करना नहीं है, बल्कि उस पर पूर्ण अधिकार से है। लोक की स्त्री अनेक पीड़ा और दुःख को सहती है और अपने पति से कहती है-

"जहिया से अइनी पिया तोहरी महलिया में

सुखवा सपन होई गइले रे पियवा

घर के करत काम सूखले देहि के चाम

तबो नाहि होवे कुछु नामवा रे पियवा।"[8]

भोजपुरी समाज की प्रकृति ही पुरूष-सतात्मक है। स्त्री मुक्ति के लिए अति आवश्यक है पुरूषसतात्मक सोच से मुक्ति पाना। पुरूष सतात्मक सोच ऐसी है कि यह स्त्री को ही स्त्री का सबसे बड़ा दुश्मन बनाती है। स्त्रियाँ न स्वयं रूढ़ियों, कुप्रथाओं, कुरीतियों का त्याग करती है न समाज में इनका विरोध होते हुए ही देख सकती है। ऐसी स्त्रियाँ समाज को जड़ बना रही हैं। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं, जो समाज की परम्परागत धारणा को तोड़कर आगे आयी हैं। उन्होंने आर्थिक क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता हासिल की है, स्वतंत्रता, समानता, और स्वायत्ता हासिल की है। चूँकि परिवार की मुखिया भी कोई न कोई स्त्री ही है जो कि परम्परागत बहू को ही तवज्जो देती है। इसलिए घर में उसकी भूमिका नहीं बदली है। डी0के0 शरन लिखते है ''इससे (कामकाजी होने से) आर्थिक रूप से स्वतंत्रता तो मिली है, परन्तु माँ, पत्नी, बहू के रूप में उसकी परम्परागत धारणा जारी है।"[9] इस प्रकार की पितृसतात्मक सोच के कारण वह दुहरे बोझ तले दबी है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लोगों में जागरूकता आयी है। दहेज लेना और देना दोनो को अपराध घोषित किया गया है। भोजपुरी समाज की स्त्रियों में भी चेतना जागृत हुई है। वह दहेज जैसी कुप्रथाओं को तोड़ने के लिए आन्दोलन और विरोध कर रही हैं। कहीं-कहीं तो यह भी देखने में आता है कि पहले जहाँ लड़के ही लड़की को विवाह के लिए ना बोलते थे,परन्तु अब लड़कियों ने भी ना कहना सीख लिया है और अपनी पसन्द-नापसन्द को सबके सामने जाहिर कर रही हैं। एक भोजपुरी गीत में वह अपने परिवार के लोगों से निवेदन करती है कि -

"आसन देखि बाबा डासन दीहौं,

मुख देखि दीहौ बीरा पान।

अपनी सम्पत्ति देखि दाइज दीहौ,

वर देखि दीहौ कन्यादान।"[10]

आधुनिकता और तर्क की पराकाष्ठा इन भोजपुरी एव ग्रामीण स्त्रियों में देखी जा सकती है। पूर्व की अपेक्षा स्त्रियाँ अब ज्यादा प्रखर और मुखर हुई हैं। पहले जहाँ रिश्ते निभाने का सारा दारोमदार स्त्रियों पर हुआ करता था। वह घर में पीड़ा, प्रताड़ना

ISBN : 978-81-19116-2

सहते हुए ससुर, सास, देवर यहाँ तक कि पति की प्रताड़ना सहते हुए भी उसी रिश्ते में जीने को अपनी नियति और बेबसी मान चुकी थी, वहीं आज विरोध करने का साहस रखती है। वह यह समझ गयी है कि स्त्री का जन्म पाकर वह कोई अभागिन नहीं है। जिस घर में उसका विवाह हुआ है उस घर में वह बेचारी, बेबस और लाचार प्राणी नहीं है। वह सबकी सहमति से पति के घर ब्याह कर लायी गयी है और वह परिवार की नौकरानी बनने को बाध्य नहीं है। एक गीत में पति उसको छोड़ने के लिए जब धमकी देता है तो वह भी मुखर हो जाती है और चेतावनी देती हुई दिखाई देती है।

"जो तुम पिया रूपैया लैहो रूपैया लैहो ना।

जइसन बाबा घरे रहली ओइसन कइके दीहो ना।"[11]

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्त्री जो समाज एवं सृष्टि की महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती, उसको समाज के बंधनों में जकड़ दिया गया है। आधुनिकता वादी दौर में, स्त्रियों में मुक्ति की छटपटाहट तो आई है। लेकिन इसका स्वरूप एवं प्रतिशत अत्यंत सीमित है। एक स्त्री के मुक्त होने को स्त्री-मुक्ति नहीं कहा जा सकता है। जब तक मुक्ति का प्रयास व्यापक एवं सामूहिक स्तर पर नहीं होगा हमारे समक्ष स्त्री-मुक्ति का प्रश्न बना रहेगा।

सन्दर्भ सूत्र

1. जनपद, वर्ष-1, अंक-1, पृष्ठ-71
2. हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, संपादकीय, पृष्ठ-15
3. आदमी के निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 227
4. भोजपुरी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ0 रविशंकर उपाध्याय, कला प्रकाशन, न्यू साकेत कॉलोनी बी0एच0 यू0 वाराणसी, पृष्ठ 27
5. वाचिक कविता :भोजपुरी, विद्यानिवास मिश्र (संपादित), भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड (दूसरा संस्करण) 2015, पृष्ठ 15
6. लोकसंस्कृति के आईने में भोजपुरी भाषा (चिंतन के विविध आयाम), सं0 डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, ओमेगा पब्लिकेशंस, दरियागंज, दिल्ली (प्रथम संस्करण) 2010, पृष्ठ 176
7. वही, पृष्ठ 248
8. वही, पृष्ठ 275
9. नारी सशक्तिकरण का इतिहास, डी0 के0 शरण, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, भूमिका से
10. लोकसंस्कृति के आईने में भोजपुरी भाषा (चिंतन के विविध आयाम), सं0 डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, ओमेगा पब्लिकेशंस, दरियागंज, दिल्ली (प्रथम संस्करण) 2010, पृष्ठ 76
11. वही, पृष्ठ 331